किन्नरों के कंठगीत

प्रायोजना : प्रतिभा सिंह

प्रथमरिपोर्ट

यह प्रायोजना एक संकल्पना के आधार पर की गई थी जिससे दिल्ली में रहने वाले वैसे किन्नरों की संख्या का आकलन किया जा सके जो गायन और नृत्य के ज़रिये अपनी आजीविका पाते हैं। दिल्ली देश की राजधानी है और यहां सभी प्रांतों और राज्यों से किन्नर भी आते है। दिल्ली के आवासीय किन्नरों में मुख्यतः, अब तक जितने लोगों से साक्षत्कार हुआ उनमें से अधिकतर हिन्दी प्रांतों से है। उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, हिमाचल, हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश, उड़ीसा के किन्नरों से मिलना हो सका। दिल्ली में किन्नर समुदाय विशेष के कई आयोजनों में दक्षिणी और पशिचमी प्रांत के भी किन्नरों की आमद हुई और बड़ी संख्या में किन्नरों से संपर्क स्थापित हो सका है।

किन्नर समुदाय सांस्कृतिक विविधताओं के वाहकों की इकाईयों से बनता है जिसे वे आपने विशिष्ट सांगठनिक ढांचे मे ंचलाते हैं। गुरूओं की कदर है। गुरू इनके अपने अस्तित्व के और जीवन में निर्णायक भूमिका निभातेहैं। गुरूओं का उनमें आतंक भी है और उनपर आस्था भी है कई तो गुरूओं से आतंकित भी हैं। किन्नरों का समाज एक बंद किले की तरह ही है जिसमें कोई दूसरा सामान्य स्त्री या पुरूष उनकी इच्छा से ही अंदर प्रवेश करता है। स्त्रीयों को तो वे फिर भी अधिक विश्वास के साथ स्वीकार लेते हैं पर पुरूषों से परहेज़ ही करना पसंद करते हैं। ये रहते तो दिल्ली में सभी जगह हैं पर अधिकतर समाज की हिकारत भरी मानसिकता के कारण बचकर, छिपकर, ओढ़कर ही रहते हैं।

कई संगठन जो किन्नर समुदाय विशेष के लिए सक्रिय है वे इनसे जुड़े हुए हैं पर इनके लिए रोज़ आपनी रोज़ी–रोटी से जूझने की ज़रूरत के कारण संगठन में इनकी कोई स्थायी सक्रियता नहीं रहती है और ये अपने को एल.जी.बी.टी. समुदाय की बड़ी छतरी के नीचे भी देखने की कोशिश करते हैं और इनके आंदोलन में भी कई बार दिखाई देते हैं जो अपने अधिकारों के लिए इकट्ठा हो कर अपनी आवाज़ व्यवस्था तक पहुचाना चाहते हैं जिनसे इन्हें अपने लिए,समाज में सामान्य वातावरण और सकारात्मक नज़रिया विकसित करने में मदद मिले।

किन्नर समुदायों में गायन और नृत्य के ज़रिये आमदनी करना सबसे बेहतर व्यवसाय माना जाता है पर मुश्किल यह है कि इनको गायन और नृत्य में दक्ष कौन करे? ऐसा कोई संस्थान भी नहीं जहां ये अपनी पहचान के साथ संगीत व नृत्य की तालीम ले सके। थोड़ा बहुत जो भी इन्हें आता है वह है टेलीविजन और फ़िल्मों का देखा हुआ नृत्य जिसे ये आसानी से कॉपी कर सकते हैं। पारंपरिक नृत्य और गीत की जगह फ़िल्मों में प्रचलित शादीब्याह के, सोहर के गीत इन्हें आसनी से पकड़ में आ जाते हैं और उन्हें ही ये येन केन प्रकारेन सीख भी लेते हैं।

प्रयोजना के तहत कार्य करते हुए ट्रांस जेंडर समुदाय की विश्वसनीयता को हासिल करना ही पहला मुश्किल कार्य हो गया। बमुश्किल उनके लिए कार्य करने वाली एक संस्था से संपर्क हुआ जो विनोदनगर में एक कमरे में उनके लिए अपना एन.जी.ओ. ''पहल'' चलाती थी जिनसे कुछ पढ़े–लिखे और कुछ अनपढ़ ट्रांसजेंडर जुड़े थे जिनको

दिल्लीसरकार की एड्स से जुड़ी याजनाओं में कार्य करने के लिए प्रोजेक्ट दिया गया था और अब उस प्रोजेक्ट के आगे न बढ़ने की स्थितिमें इस संस्था के पास आगे बंदी की स्थिति थी । आज तो वह संस्था बंद ही है क्योकि उन्हें सरकार से प्रोजेक्ट नहीं मिला।

फ़िलहाल जो भी ट्रांसजेंडर समुदाय के लोग प्रीति, रूपसी, हेमा, रसभरी, सत्यम आदि मिले जिनके सामने भी प्रश्न यही था कि इस सबसे होगा क्या? फ़िलहाल इसका जवाब तो हमारे पास यही था कि हम आपकी स्थिति और आपके पास जो नृत्य और गीत का कुछ है उसको इकट्ठा कर ऐसी कोई योजना बनाना चाहते हैं जिससे आपको अच्छी छवि भी मिले और रोज़गार भी। प्रदर्शनकारी कलाओं में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। ख़ैर, जो भी हो वे तैयार तो होउ गये कि हम कार्यक्रम करेंगे पर सवाल यह था कि कब और कैसे। फ़िलहाल तो ज़रूरी यही था कि वे नियमित आयें मिले और गीत वगैरह बतायें। पर वे अभी इस बात के लिए राज़ी नहीं थे कि उनके गीतों को रिकार्ड कि या जाये। हमने मान लिया और हमने यही कहा कि एह आपके जीवन पर आधारित एक प्रस्तुति श्री राम सेंटर में करने की व्यवस्था करते हैं इस पर वे तैयार हो गये।

अब समस्या यह थी कि उनसे हम क्या प्रस्तुत करवायें? कोई नाटक, बैले तो ऐसा है नहीं जिसमें किन्नर प्रमुख चरित्र है। जो नाटक है भी तो वह किन्नरों को सभ्य समाज के नज़रिये से देखा गया नाटकीय चरित्र है जिनसे इसका जीवन सर्वथा अलग है। फिर तय यही हुआ कि ठीक है, इनके अपने जीवन की कथाओं को सुना जाये और उसी को इनके गीतों में पिरों कर एक प्रस्तुति बनाई जाए। यह विचार उन्हें भी

पसंद आया और फिर शुरू हो गये उनके अपने जीवन यात्रा और अनुभव को रकम करने का सिलसिला। उन्होंने अपने अनुभव बताये और जिन्हें एक साथ रख कर नाट्य प्रस्तुति का एक खांका बनाया गया जिसमें एक दृश्य से दूसरे दृश्य में शिफ़्ट करते हुए उनके द्वारा गाये जाने वाले
गीतों को भी जोड़ना था।

आख़िरकार उनके अपने व्यक्तिगत अनुभवों और गीतों पर आधारित एक प्रस्तुति बनी, ''खुशियां और अफ़साने'' जिसे मंच पर सुधी दर्शकों के सामने एक कलात्मक संवाद के रूप में प्रस्तुत करने की चुनौती थी। इस वास्ते रिहर्सल करनी पड़ी, उनके आने जाने और अल्पाहार की व्यवस्था भी करनी पड़ी। किन्नर समुदाय में संकोच नहीं होता, उन्हें जो लगता है तुरत ही कह देते हैं। वे जब भी ज़रूरत होती पैसे भी मांग लिया करते थे कि यहां जाना है तो उसे देना है। 24 सितंबर 2015 को श्री राम सेंटर एवं 25 सितंबर 2015 को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में ''खुशियां और अफ़साने'' का मंचन किया गया। सबने इस प्रयास की सराहना की।

आज तक यानी सितंबर 2018 तक प्रस्तावित प्रायोजना के लिए किन्नरों के साथ संपर्क और विश्वसनीयता का ही उद्देश्य हासिल हुआ है। कुछ गीत संवाद आदि तो संकलित हुए हैं पर इसे संतोष नहीं है ।

संपर्क सूत्र बने हैं पर उनके अस्थायी आवास और कार्यक्षेत्र के कारण उनके संदर्भित गीतों का सही दस्तावेज़ीकरण करना अभी तक संभव नहीं हुआ है। हां, उन्होंने यह आह्वासन ज़रूर दिया है कि आने वाले दिनों

में यदि उन्हें कोई आर्थिक फ़ायदा हो तो वे फ़िल्मी गीतों से इतर जो पारंपरिक और सांस्कारिक गीतों को रिकार्ड करवा देंगे ।

इस आलोंक में यदि दूसरा इन्सटॉलमेंट मिल जाये तो दस्तावेज़ीकरण का सत्र रख कर उनके गीतों आदि को संकलित किया जा सकेगा।

प्रतिभा सिंह
भूतल, 25 बी.,
एल. ब्लॉक, साकेत,
नई दिल्ली 110017

9911774307
kalamandalidelhi@gmail.com

<u>भारत के ट्रांसजेंडरों में ढ़चित एवं अंगरी.</u>

भारत के ट्रांसजेंडरोंमेयँ समुदाय मेढ़चितों की संख्या 80ः के आस पास है 20% म्लासिलिया ओर अन्य उच्चतम एवं पिछड़ी जातियाँ हैए ज़्यादातर योग समलैंगिक पहचान में आने वाले लोग उच्चतम जतियों से ही आते है इसलिए वह गादे-बगादे मौका नहीछोरते किस तरीके से ट्रांसजेंडर एवं दलित समुदाय का अपमान किया जाए ओर उनकी जगह दिखाने का प्रयास किया जाता है वह जगह कौन सी है वह सफाई वाली जगह हो सकती है या उनके हाथ की सफाई।
यह दलितो के हाथ एसडबल्यू सफाई करवाना यह हमारे देश के सबसे बड़े उच्च कुल कुल जाति-बिशेष पर आधारित वार्ता के समलेंगीक नंबरदार है ओर इनकी सोच यही है कहते है दबे कुचले की आवाज है लेकिन यह कुचलने की ही आवाज मे बात करते है ओर आज ट्रांसजेंडर समुदाय ऐसे ही लोगो की संस्थाऔ के द्वारा कुचला जा रहा है ट्रांसजेंडरोंमे समुदाय की आवाज बनने के हर एक ख़्वाहिश पूरी करते हैं यह लोग अपने आप को किसी हिजरा गुरु का चेला भी बोलते है ओर समलैंगिक पहचान को किसी तरीके से ट्रांसजेंडर पहचान की भी मथिनिंग करना आसानी से जानते है आज भारत मे किन्नर समुदाय की कोई नेतृतव करने वाली राष्ट्रिए स्तर की कोई संस्था नही है इसलिए तरीके ट्रांसजेंडर पहचान की भी क्लीनिंग करना आसानी से जानते है आज भारत में किन्नर समुदाय की कोई नेतृटव भरी राष्ट्रीए स्तर की कोई संस्था नही है इसलिए इनको मौका मिलता है कि किसे उठाना है ओर किसे गिराना है या द्वाना है किसे गला घोटना है। इनहिसंलेगिकसंस्थाऔ की कुछ एक ट्रांसजेंडर खिलौना बनकर के रह है बिहार मे भी कमोबेश यही स्थिति है जो भी संस्था निक तौर पर समलैंगिको एवं किन्नरो के नाम को उपयोग करने बाली संस्थाए है वह उच्च कुलीन लोगो कि है संस्थाऐ है

<u>किन्नर राजा (ब्राहण वादी)</u>

बधाई गाने वाले रेडलाइटो पर भीख माँगने वाले देह व्यापार मे लगे रहते है मुस्लिम कम्यूनिटी एवं दलित समलैंगिकता के बीच लड़ाईलरने बाले लोग भी अब ट्रांसजेंडर कि श्रेणी मे आ गय है जब कि दोनों अलग अलग लोग है। आज ट्रांसजेंडर की बात जो ज़ोर शोर से हो रही एक विदाई भाषा या भाव से अपनी जगह बना पाई है ट्रांसजेंडरो कि लड़ाई लड़ने वाले लोगो में सांस्कृतिक सहयोग्यात्मक रवैया के चलते कई शंकरात्मक निर्णय लिए जा रहे है। सांस्कृतिक आन्दोलन के माध्यम से विगत कुछ वर्षो से ट्रांसजेंडरकम्यूनिटी कई जगह अपनी पहचान बनाने मे कामयाब हो पाई है। जैसे हाथ मे उदाहरण के तौर पर वचन-वाचन म्होत्सव (दिल्ली) किन्नर महोत्सव (पटना) तथा उज्जैनमे तो एक किन्नर अखारा ही बन गया है जब हम जन संस्कृति से जुरते है तो अपने आप ही लोग जुरने लगते हैए पर जो आम आदमी अवधारणा है कि समलैंगिकता भी इसी श्रेणी मे आते है यह धारणा गलत है क्योकि किन्नर हमेशा अपना वेश स्त्री रूपी ही वेश मे रहता हैएवो चाहे रंग लाइट पर हो या बधाई माँगने जाने पर वो भी वो स्त्री वेश मे ही रहता है।

भग्वद्ज्जुकम

(योगी ओर नर्तकी का तमाशा)

लगभग 2000 साल पहले बोधायन का लिखा हास्य -
वयंगनाट्यभग्वद्ज्जुकम एक योगी ओर नर्तकी के बीच असंगत मेल से उपजा बेहद रोचक प्रसंग प्रस्तुत करता है। आधायत्मिकता ओर सांसरिकता के बीच का मंद विश्व मे सदा ही हास्य उपहास का एक रोचक प्रसंग रहा है जो हमारे समकालीन वयक्तियों के दोहरे मानसिकता को सहज ही उजागर करता है। सांसरिकता को आकुल मन ओर आध्यात्मिकता मे रमी व्याकुल आत्मा के बीच एक सनातन पद रहा है। सच्चा योगी सांसरिक योग विलाश को तुच्छ मानता है तो सांसरिकतामे रमा व्यक्ति योग विलाश को ही इस देह का परम सत्य माना है दोनों ही अपने आनंद को सर्वोपरि बताते है ओर इन दोनों से निरपेक्षए मृत्यु ऐसा सत्य है जो दोनों पर सम दृष्टि रखती है।
प्रहसनभग्वद्ज्जुकम कि कथा में एक सिद्ध योगी अपने युवा चंचल शिष्य के साथ भ्रमण करता हुआ उसी उपानमे आता है ओर वशंत सेना को देख चंचल शिष्य अभिभूत ओर आसक्त होता है। प्राणो को हरनेवाला यमदूत भुलवश वसंत सेना के शरीर में प्रवेश क्र कर वशंत सेना को जीवित कर देता है।

शादी

हल्दी लगाऔरी मांग सजाऔ

बन्नी को उबटना नहालाऔ

<u>देवी गीत</u>

काहे को तोरी एक बतिया ही बताऔबताऔ काहे के जात काहे को रंग
भूलना झाहे को हार मईया सेवा तुमारीजगदेवकरे हो यांमाई सेवा तुम्हारी
.....
अरे को ल्याबेतोरी एक बतियाँ हो बताऔ ओ बतियाँ

कोई प्याबे जारए कोई ल्याबे रंग भूलनाए
को ल्याबे हार माई सेवा तुम्हारी.....
बाढ़ईल्याबेतोरी एक बतियाँ हो बतियाँबतियाँसुनरा को जर धरजीत्याबे रंग भूलना मलिया को हार माई सेवा तुम्हारी कैसे को आवे रंग भूलना कैसे हार माई सेवा तुम्हारी .....
बाजटआवेतोरी एक बतिया हो बताऔ बतिया
झनकारत जात झुमनआवे झूलना महकतआवे हार माई सेवा तुम्हारी

<u>सोहर</u>

<u>ओ राम जीजेइ को पिराये बोई जाने इसरो को जाने</u>
अँगना में नींबूलागे भीतर अनार लागे राम जी खिरकन लगे धुआरेदुआरे नाग पिपरईया ओ राम जी जेइ.....
अँगना में नींबूटोरे भीतर अनार टोरेखिरकन दाख दुआरे सो दुआरेटोरेपिपरइयाँ ओ राम जी जेई.....

अँगना में पिरे आईए भीतर मरोरे आई राम जी खिरकन भयेनन्द लाल ओ राम जी जेई.....

<u>सोहर (गर्माधाम)</u>

ओ राम जी किसको पीड़ा होती है वही जानता हैएदुसरो कौन जाने आँगन में नींबू लगे भीतर अनार लगे राम जी झरोखे में लगे छुआरे द्वार पर लगी पीपर ओ राम जी ओरवन में नींबूटोरे भीतर अनार टोरे झरोखे में किशमिश छुआरे ओर द्वार से तोरीपीपर ओ राम जी.....
आँगन के प्रसव पीड़ा आईए भीतर मरोड़ आई राम जी झरोखे में दुए नंदलाल नंदलाल के द्वार पर बाजे बढ़ाइया।

<u>अंगना (गर्भाधान)</u>

ऊपर बादल गड़गड़ा रहे हैए नई बहू पानी को निकली जाके ये कहना उनके राजा ससुर से आँगन में कूआ खुदा दे
तुम्हारी बहू पनि को निकली ऊपर बादल.....
जाके ये कहना उनके राजा जेठ से चंदन के पाते डलवा दे तुम्हारी बहू पनि को निकली ऊपर बादल.....
जाके ये कहना उनके राजा देवर से रेशम रस्सी मँगवा दें तुम्हारी भाभी पानी को निकली ऊपर बादल.....

जा के ये कहना उनके राजा ननदेऊ मोती कि कुडरी मंगवा दे तुम्हारी बड़ी पानी को निकली ऊपर बादल.....

जाके ये कहना उनके राजा ननदेऊ

<u>सोहर</u>

अँगना में बाग लगा नये फूल बड़े सुन्दर खिले हैं।
अँगना में ससुर हैस पुछें ऐसे कौन फल खाये लाल बड़े सुन्दर भये हैं
अँगना में.....
मैतो तुमने खाये नींबू नारंगी खाये गरी के गोला बरबरी में बाग लगा लये
फूल बड़े सुन्दर भये है

अँगनामेठाड़ेननदेऊहैस पूछे ऐसे कौन फल खायो बड़े लाल सुन्दर भये है अँगना में

<u>देबी गीत</u>

किस प्रकार से दर्शन पाऊँ रीमाँ तेरी लगी लगी है किचड़ियाँ माँ के द्वार पर एक अंधा पुकारे दे दो घर जाऊँ रीएयो तेरी माँ के द्वार पर एक कोढ़ी पुकारे दे दो काया घर जाऊँ री माँ तेरी.....
माँ के द्वार पर एक बांझ पुकारे दे दो पुत्र घर जाऊँ रीए माँ तेरी.....
माँ के द्वार पर एक हिजरा पुकारे दे दो श्रवय घर जाऊँ री माँ तेरी

बन्ना

वर तुम पाल के नीचे मतजाऔतुम्हें नज़र जायगी वर को कौन झाडे फुके कौन नज़र उतारेगा वर के बाबा झाडे-फूके दादी नज़र उतारेंगी वर तुम पाल के नीचे मतजाऔ वर के पिता झाडेफूके माता नज़र उतारेगी।

<u>सोहर</u>

सील लोढ़े से पीसो पीपर महाराज आँगन में बो ही सौंध जलघर (पानी रखने के अस्थान)में पीपर महाराज

सील लोढ़ा से पीस कर बाँटो कटोरा भर बाटोए महाराज आँगन में खरे सुसर बहू भी समझ रहे पिलो बहू पीपर का पानी

पुत्र अच्छी तरह दूध पिये महाराज पीपरझरवी हर तरह से हम से न पी जायए महाराज

सील लोढ़ा.....

प्रसव के पश्चात जब प्रसूता को पानी में उबाला हुआ पानी दिया जाता है। पीपर ओर सोंढ पीसकर आटे गुड़ एवं घी के साथ मिलकर लड्डू बनाए जाते है। सील लोढ़े से पीपरए महाराज आँगन में बो दी सौंढजलघर(पानी रखने के स्थान)में पीपर महाराज

<u>सोहर/बधाई</u>

जसोदा ने जाए नंदलाला बधाई उनकी होथ रई महाराज

सासों जी आवेचरुआघरावै (2 वार)

चरुआघराईनेंग माँगे

बधाई देखा होय रई महाराज जसोदा ने.....

ननदी जो आवे पालना लैआवे पलना घराईनैग माँगे ललन उनके हो गए

महाराज जसोदा ने.....

बन्नी

बरसनलागे फूल झड़ाझड़ इनरी के लाने बनरी के आजूल न करियो ईश्वर पार लगाए बरसनलागे.....
बनरी के चाचा सोच न करियो ईश्वर पर लागए
बरसनलागे फूल झराझर.....
बनरी के भईया सोच न करियो ईश्वर पर लगाए
बरसनलागे.....

संगीत नाटक अकादेमी

भारतीय संस्कार गीतो में सोहर का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। यह गीत बालक के जन्म के बाद गाया जाता है। शिशु जन्म से उत्पन्न उल्लास ओर दान धर्म तथा उत्सव की बाते इस गीत के माध्यम से कही जाती है। इस मे गीत में हमारे समाज में किन्नरों का योगदान बहूत हद तक बचाने में किया गया है। इस गीतो के माध्यम से किन्नर घरो में जाकर सोहर गाते है तथा इसके एवज में उन्हे कुछ दान मिल जाता है। ऐसे गीतो में ये श्रीकृषणए तथा राम के अविभार्व होने की कथा कही जाती है। ये गीत मूलतः हिन्दी पट्टी क्षेत्रोमे गाए जाते है। हिन्दी पट्टी क्षेत्र से ही ज़्यादातर हिन्दी पट्टी क्षेत्र में इस का प्रचलन आज तक है।

सोहर

भादवरईनीभयावन रिमझिम बूँद पड़े हो ललनाजनमन त्रिभुवन नाथ गगन सुर सुमन झड़े हो
संख चक्र गदा पदम त पीत पीताम्बर दे ललना मोर मुकुट वनमाल त ज्योकिअनन्त आधा रात बितल पहर रात आउर पहर रात है।
खुली गेल ब्ज्रकै वार पहरूसरमूलदेखतअदभूत रूप त सामी से अरज करे रे ललनाउमडट जमुना के नीर उमड़ी के चरण छूए हो।

आपन बालक बसुदेवराखल देवी के उठाबल हे ललनाबजट आनन्द
बजनवाजसोदा के कन्हैया भय हो
तीन लोक के नाथ कन्हैया जी ने जन्म लियो है
कहाँ कन्हैया आने जनम लियो कहाँ बाजे बधैया
कन्हैयाजी ने जनम लियो है
तीन लोक के नाथ कन्हैया जी ने जन्म लियो है
मथुरा कन्हैया ने जनम लियो है गोकुल बाजे बधैया
कन्हैयाजी ने जनम लियो है

इसकी ब्याख्या इस प्रकार की गई है की भादों मास की अर्द्धरात्रि में बड़ी भयानक होती है यह अंधेरी तो होती ही है बादलों में गर्जनए बिजलियों में कंपन और रिमझिम फुहार की झड़ी लगाने के कारण और भी भयानक हो जाती है ऐसे ही अवस्था में तीनों लोकों के स्वामी भगवान श्रीकृष्ण का जन्म कंस के कारागार में होता है। इनके जन्म लेते ही अर्थात इस मृत्युलोक में प्रकटित होते ही देवताऔ ने आकाश से पुण्य दृष्टि आरंभ कर दी। ईनका वस्त्र पीला थाए अर्थात वे पीताम्बर धारण किए हुए थे। भगवान कृषणएक्योकि आदि पुरुष चीरपुरमन तीनों लोको के स्वामी भगवान विष्णु के अवतार थे इस लिए वे अपनी भुजाऔमे शंखए चक्रए गदा पदमपासे लिए हुए थे भगबान विष्णु के एक हाथ में शंखए दूसरे में सुदर्शन चक्र तीसरे में कौमोद की गदा ओर चौथे में कमल का पुष्प होता है। भगवान राम का भी प्रागत्य इसी रूप मे हुआ था क्योकि वे भी भगवान विष्णु के ही रूप अर्थात अवतार थे। उनके मस्तक पर मोर का मुकुट था। गले मे वनमाला थी। उनकी ज्योति अनन्त थीए अर्थात वे दिव्य ज्योति संपन्न थे। आधी रात वित आई। एक पहर रात ओर बीआईटी गई कंस के कारागार मे सभी प्रहरी सो गए।
बज्रके समान भयानक कपात सब अपने आप खुल गए। भगवान के अदभूत अलौकिक दिव्य स्वरूप को देखकर माता देवकी अपने स्वामी वसुदेव जी से प्राथना करती है की हे नाथ इस बालक को आप सिघ्र गोकुल नगरि में मेरी प्रिये सखी यसोढा के घर पहुचा दे। वसुदेव जी ने बालक को शीघ्र मे ले

लिया ओर यमुना नदी में प्रवेश कर गए। यमुना की उमड़ती हुई जल द्वारा भगवान कृष्ण के चरणों का स्पर्श करने के लिए निरन्तर ऊपर बढ़ने लगी। भगवान ने अपने चरण लटका दिये चरण छूकर जल घट गया वसुदेव आराम से यमुना पर कर गए। उन्होने अपने बालक को यशोढा के बगल मे लिटा दिया ओर यशोढ़ा से उत्पन्न बच्ची देवी योगमाया को लेकर चले गए। यसोढ़ा के घर तो आनन्द बघावा बजने लगा। लोगो ने तो यही जाना की यसोदा के घर मे ही भगवान कृष्ण का जन्म हुआ। इस गीत को खेलौना कहा गया है। यह भी किन्नर समुदाय प्रायह: गाते है है। यह भी एक प्रकार का सोहर का ही रूप माना जाता है। इसमे भी शिशु जन्मोत्सव का उल्लेख होता है। इस गीत के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के अवसर पर मनाई जाने वाली खुशियाँ का वर्णन करते है।

<u>खेलौना</u>

जसोदा को भय नन्द्लालबघावा लाई ग्वालनिया मलिन लाई हार
ट्मोलियनविडबा अब सोलह सौ बंदवार लाई हिरजनियों मालिन पहिरो
चुनरी तमोलिनपीअरी अब पेनहीद्छिनके चार नाच हिजरीनियो मलिन
गावतसोहरतमोलिनसोहर अब नाची नाचीपावतसोहर सकल हिजरिनीयां।
मालिन देतआसीषट्मोलिन दे चली अब जुग जुगटोरे लाल क़हतहिजरीनिया।

<u>व्याख्या</u>

माता यसोदा के घर नन्द्लाल श्री कृष्ण ने जन्म लिया। ग्वालिने अर्थात गाँव मे रहने बाली ग्वाली स्त्रियाँ खुशहाली मे तरह तरह के उपहार लेकर आई है। मलिन फूलो का हार लेकर आई तमोलिन पान का बीड़ा लेकर आई है। किन्नर सोलह सौ वन्द्वार लेकर अर्थात घर को सजाया जायगा। मालिन ने सुन्दर वस्त्र धारण किया है। वह चुनरी पहने हुए है। तमोलिन ने पियरी अर्थात उत्सव का वस्त्र धारण किया है। हिजरीनियाभी दान मे दिये गए सभी किन्नर नाच नाचकर सोने ओर चाँदी के सिक्के प्राप्त कर रही है। मलिन भी शिशु को आशीष दिया। किन्नरों ने भी आशीर्वाद देकर गयी सभी ने कहा यशोदा तेरा लाल युग-युग जीता रहे। जो कि अभी अभी हमारे समाज में यह प्रथा चली आ रही है किन्नर समुदाय आज भी इस प्रथा का जीवित कर रखा है।

<u>आशिर्वादी</u>

इसका नाम आशिर्वादी है। इस गीत में आशिर्वाद दिया जाता हैए इस आशिर्वादी कहते है। शिशु जन्मोत्सव पर गाऐ जाने बाले गीतो में यह विशेष है। इस गीत मे शिशु के समय परिवार के जीने की कामना की गई है। दिल्ली प्रांत में इसे जीवना कहते है। इसे किन्नर समुदाय चावल के

दाने को लेकर जीवना गाते है। बिहार यूपी तथा मध्य प्रदेश में इसे आशिर्वादी कहा जाता है।

<u>आशिर्वादीगीत</u>

दादा जिए दादी जिएओरजिए परिवार भुअरभूअर बाल मेरी लला को ओर जिए परिवार मेरे लला को

अम्मा जिये पापा जिये ओर जिये परिवार ओर जिए परिवार मेरे लला को गोरे गोरे गाल मेरे लला को चाचा जिए चाची जिए ओर जिए परिवार मेरे लला को

मामा जिए मामी जिए ओर जिए परिवार मेरो लाल के

मौसा जिए मौसी जिए ओर जिए परिवार मेरो लला को गोरे गोरे गाल मेरो लला को भुअर- भुअर बाल मेरे लला को घूँघरघूँघर बाल मेरो लला को।

<u>वायख्या</u>

हे भगवान मेरे लला के दादाए दादी सब जीबीट रहे उसका सारा परिवार दीर्घायु हो मेरे लला के बल भूरे रंग के है। मेरे लला के गाल गोरे रंग के है उसकी अम्माए पिता तथा सकल परिवार सभी जिये लला के चाचाए चाची सभी परिवार जिये लला के फूफाए फूफी तथा सकल परिवार जीवित रहे मेरे लला लला के बाल भूरे भूरे है उसके नानाए नानी सभी जिए लला के सभी परिवार जिए मेरे लला के मौसाए मौसी सभी जीवित रहे। उसके परिवार के सभी लोग जीवित रहे मेरे लला के बल भूरे भूरे है।

<u>छंदवालासोहर</u>

यह भी एक प्रकार का सोहर ही है। यह सोहर पद तथा छंद के रूप में गाया जाता है प्रायः इस प्रकार के सोहर कम ही गाए जाते है परंन्तुकिन्नरो से आग्रह करने पर इस प्रकार के सोहर सुनने को मिलता है।

<u>छंदवालासोहर</u>

पद हरि जदुनाथजसोमति अंक लगाओत रे ललना रे जनी पथ पडलपरसमनिनीर्घनपाओल रे

<u>छंद:</u>नीरधन धन पाव मगन भेल आनन्द उर न समाये सो कहथीहरही गंधर्व अबतक निकली जदुकुलराययो

<u>पद:</u>पहिलुकतुरत जसोमति तनय नेहाओल रे ललना सुनी नंद डगरिन सहित घाय गृह आयेल सो।

<u>छंद:-</u>धाय भयेगृह आये डगरिन आनन्द भेल सुन मोर योजदुबंस वीर समुदाय संग जनु प्रकट दोसर चन्द यो

<u>पद:-</u> नर छेदा ओलडगरिनपाओल रे ललना रे जुग जुगजीवलिजसोमति यादव राय यो

छंद:- देखि तनय टोहरजसोमति मुदित यादव राय योअति उधवबघावहुलास गोकुल द्वार दुंदुभि बजयावरी

पद:-सुर नर मुनि सब हरखितसगरदेवगन रे ललना ऐ कंसनिकंदनहेत नंद गृह आयेल रे

छंद:-नंदलाल कवि भैलनेहल गोकुल भेल सनाथ यो धन्य जसोदा भाग टोहर प्रगत श्री जदुनाथयो

वायाख्या:-यशोदा ने भगवान श्रीकृषन को अंग से लगा लिया है जैसे किसी निर्धन को राह मे पड़ी हुई पारसमणि मिल जायतो उसकी खुशी की सीमा नही रह जातीए उसी तरह यसोदा के खुशियाली की कोई सीमा नही है। निर्धन को धन मिलने पर मन मग्न हो जाता है। उनके दिल में आनन्द समा नही रहा है। गंधर्व ओर किन्नर सभी हर्ष से कह रहे है की यदुकुल राय नंदजी को पुत्र हुआ है। यशोदा ने तुरंत पुत्र को स्नान कराया। यह समाचार सुनकर नंदजी तुरंत डगरिन के साथ ही यसोदा के कक्ष में आय। उन्होने कहा कि पुत्र होने का समाचार सुनकर अतिशय आनंद हुआ है। यदुवंशरूपी क्षीर सागर से मानो दूसरे चन्द्र का प्रागतय हुआ है। चंद्रमा का जन्म समुंदर से हुआ है ऐसी मान्यता है। बल काटने पर डगरिन को मोहर प्रपट हुई है। डगरिन ने भी आशीर्वाद दिया है कि यशोदा का पुत्र ययुग युग जीवित रहे। यशोदा के पुत्र होने का समाचार सुनकर सुर नर मुनि सभी हर्षित है ओर किन्नर भी नाच ग रहे है सभी आनन्द मना रहे है।

<u>सगुन</u>

यह सगुण गीत है इसे विवाह से पहले गाया जाता है इस गीत को सभी जीबीतवायक्तियों का नाम लेकर के गाने की परंपरा है इसे किन्नर समुदाय बेटा या बेटी की शादी ठीक होने पर गाते हैए ओर इसके बाद देवता के गीत भी जाते है। सगुण का गीत ज़्यादातर लड़की के घर मे गाया जाता है।

कवने वन रहल हे कोइलरकौने वन जय केकरदुअरिया से कोइलरउछहल जय। मधुवनरहल हे कोइलर बने व्ने जाए अमुक दादा दुअरिया हे कोइलरउछहलजाय। जुगेजुगेजीअ हे कोइलरवोलीयातोहरबोलियाकोइलर लगन सुनाय जगाये।

<u>वायाख्या:-</u>

किस वन मे कोयल रहती है यह किस वन मे जाती है। किसके दरवाजे पर कोयल उछलती हुई जाती है। यह कोयल तो मधुवनमे रहती है। हे कोयल तुम युग युग जीओ तुम मीठी बोल बोल सुनाती हो तुम्हारी बोली विवाह के शुभ लग्न का संकेत है। लग्न गाने के पश्चात तिलक चढाने से लेकर बराती बिदाई तक के गीत किन्नर लोग गाते है। आज कल तो टि॰ वी॰ के आ जाने से फिल्मी गीतो का प्रचलन इस समुदाईमे भी बढ़ गाया है।

<u>तिलक के गीत:-</u>

यह तिलक चढ़ाने के समय गाने का गीत है। इसमे भरपूर तिलक दहेज न मिलने पर लड़की के पिता को गाली दी जाती है।

<u>गीत तिलक:-</u>

ठग लिया लड़का हमरा रे समधी बेईमान हमने कहा था सोने का गगरा पीतल के नाहीठेकाना रे समधी बेईमान ठगा हमने कहा था सोने का परात पीतल के नाहीठेकाना रे समधी बेईमान हमने कहा था सोने की थाली

छिपली का नाही ठेका रे समधी बेईमान ठग.....
हमने कहा था बड़ा बड़ा लोटा ढुईयो का नाहीठेकाना रे समधी ठग.....।
सोने के पान ओ कसैली माँगा था हरिहरपानो के नाही ठिकाना रे समधी बेईमान।

<u>वायाख्या:-</u>

हे बेईमान समधी तुमने हमारे लड़के को ठग लिया हमने तुमसे सोने का गगरा माँगा था। तुमने पीतल का भी नही दिया हमने सोने का परात माँगा था लेकिन यहाँ तो पीतल का भी ठिकाना नही है। हमने सोने की थाली माँगी थी लेकिन यहाँ तो छिपली का भी ठिकाना नही है। हमने तुमसे बड़ा बड़ा लोटा माँगा था मगर यहाँ तोढुईयो का भी ठिकाना नही है। हमने कहा था तुम बड़ा कटोरा लेकर आना मगर यहाँ तो छोटी कटोरी का भी ठिकाना नही है। हमने सोने का पान ओर कसैली माँगा थाए मगर यहा तो हरे पान का भी ठिकाना नही है।

<u>कुलदेवता</u>

गोपी भौजी बोलथीनवंदी देव सुनहु सुमन लाल मोरो चौड़ा जलवा लगिए गेल मकरी बिछाई गेल हँसी हँसीबोलथीन सुमन लाल सुनहु बंधी देव तोरोंचोड़ाचननेनिपाये देवअंगूरेठयोराये देव आरी आरी तुलसी लगाए देव दूधवेपठाये देव यह गीत कुलदेवता से सम्बंध रखता है। यह गीत बन्दी नाम के एक बिसेष कुलदेवता के नाम से है। इसकी व्याख्या यह है की क्रोधित होकर बंदी देवता बोलते है हे सुमन लाल सुनो मेरे चबूतरे पर अर्थात जहाँ पूजन की हमारी पिणडी हैए मकड़ी का जाला लग गया है ओर कीड़े मकोड़े से यह स्थान दूषित हो रहा हैए सुमन लाल हँसकर कहते है हे बणडी देवता आप सुनिए आपका उस चबूतरे को मै चन्दन से लिपवा दूँगा वहाँ अंगूर ढरकादूँगा किनारे किनारे तुलसी का पौधा लगा दूंगा ओर आपकी पिंडी का मै दूध से स्नान करा दूँगा।

<u>विवाह</u>

यह गीत बेटी विवाह का गीत है।

बेटी गीत

बाबा जेचललन घर वर खोजन बेटी कवरियाधैल ठाठ है अपना जुगुट बाबा समधी जेखोजीहधियाजोगेखोजिहधि जमाये है पूरबखोजल बेटी पश्चिम खोजलखोजल जगह मुंगेर हे अपना जुगति बेटी समधी जेभेंटलतोराजोगेभेंटलधी जमाये हे हरिहरबसवाकटातोब रो बेटी भल गए मड़वा छ्वाये है चढ़े बइसखवा लगन भला देखवधुमे धाम करबविआह हे चढ़ते फगुनवा लगन विचारहु भले विधि करहुविआह हे चढ़े बइसखवाधेवनहोईहेखटरसदहिया अमोघ होई जाये है

<u>व्याख्या</u>

बाबा घर वर खोजने के लिए चले बेटी किवाड़ घेर कर खड़ी है उसने कहा हे बाबाए आप अपने योग्य ही समधी खोजो मगर पुत्री के योग्य ही जमाई खोजने का प्रयत्न को। बाबा ने पूरव पश्चिम सभी दिशायेमे वर की खोज की उन्होने ने मगह ओर मुंगेरमे भी खोज की। हे बेटी अपने योग्य समधी में हमको मिल गए। ओर तुम्हारे योग्य जमाई भी मिल गए। हरा बास कटाकर हम मंडप छा देंगे। बैशाखमहिना चढ़ते ही शुभ लग्न देखकर धूमधाम से तुम्हारा विवाह कर देंगे बेटी कहती है हे बाबा फाल्गुन चढ़ते ही लग्न का विचार करे। उसी समय विवाह करना ज्यादा अच्छा रहेगा। बैशाख चढ़ते ही जेवनार कराने की वस्तुए खट्टी हो जाएगी। फलो का स्वाद बिगड़ जाएगा। दही का स्वाद भी खराब हो जायगा।